# अतिरिक्त अध्ययन

# रोमियों की एक रूपरेखा

**परिचय ( 1:1–17 )**

I. डॉक्ट्रिनल (1:18–8:39)
   क. दोष लगाना (1:18–3:20)
      1. अन्यजातियां
      2. यहूदी
   ख. धर्मी ठहराया जाना (3:21–5:21)
   ग. पावित्र ठहराया जाना (6:1–7:25)
   घ. महिमा पाना (8:1–39)

II. व्यावहारिक (9:1–15:13)
   क. व्याख्या (9:1–11:36)
      1. विश्वास से धर्मी ठहराया जाना इस्राएल के साथ की गई प्रतिज्ञाओं के साथ मिलना
      2. विश्वास से धर्मी ठहराया जाना परमेश्वर की विश्वासयोग्यता से मेल
   ख. प्रासंगिकता (12:1–15:13)

सारांश (15:14–16:27)

# बिना अलग हुए असहमत होना
## (रोमियों 14)

### विचार के मामले?

**कलीसिया में**

कलीसिया के भीतर लोगों में सदा से असहमतियां रही हैं और रहेंगी। इनमें से कुछ असहमतियां डॉक्ट्रिन सम्बन्धी होती हैं। ऐसी असहमतियों के विषय में, यहूदा ने लिखा, ''उस विश्वास के लिए पूरा यत्न करो, जो पवित्र लोगों को एक ही बार सौंपा गया था'' (यहूदा 3)। परन्तु मण्डलियों में विचार के मामलों पर गड़बड़ियों में सबसे अधिक प्रतिशत इसी का है। रोमियों 14 में पौलुस ने बताया कि मसीही लोगों को उन मुद्दों पर असहमति होने पर जो विश्वास के मामले नहीं हैं, कैसे व्यवहार करना चाहिए। मसीह में भाइयों और बहनों के रूप में हम कलीसिया में विभाजन[1] किए बिना असहमत होना सीख सकते हैं।[1]

**समाज में**

पौलुस की चिंता कलीसिया में विभाजन की थी, परन्तु रूपरेखा में दिए गए सिद्धांतों से किसी भी परिस्थिति में, जिसमें लोग साथ न चलें, सहायता मिल सकती है।[2] दूसरों को ग्रहण करने, दूसरों को बनाने और दूसरों को (अपने आप को प्रसन्न करने के बजाय) प्रसन्न करने के नियमों से किसी भी विवाह और परिवार में लाभ होगा। इन अवधारणाओं से कारोबारों और समाजों में तनाव कम हो सकता है और यहां तक कि राजनैतिक क्षेत्र में भी। जिम्म मैक्गुइगन ने लिखा है कि ''अपने ढंग से चलने की ऊंची नाक की ज़िद ... माता–पिता/बच्चे की समस्याएं बढ़ाती है; पति/पत्नी की समस्याएं तलाक में बदलती हैं; [और] राष्ट्रीय और अन्तरराष्ट्रीय समस्याएं दंगों और युद्धों को जन्म देती हैं।''[3]

### विश्वास की बातें?

रोमियों 14 को असहमति के लिए कठोरता से लागू करने से पहले यह तय करना आवश्यक है कि मुद्दा विचार की बात का है। परन्तु मेरा मानना है कि हम सही ढंग से उस वचन से कुछ सामान्य नियम बना सकते हैं, जिससे हमारे किसी भाई के साथ *किसी भी समय* असहमत होने पर सहायता मिलेगी, चाहे वे अन्तर शिक्षा सम्बन्धी ही हों, जिनकी चर्चा की जा रही है। नीचे कुछ उदाहरण हैं; आपको और भी मिल सकते हैं।[4] (मुझे इन याद दिलाने वालों की आवश्यकता है; शायद आपको भी है।)

**यकीन मानें और सुसंगत बनें[5]**

पहले तो हमें परमेश्वर के वचन का पूरी तरह अध्ययन करना और लगातार प्रार्थना करना

आवश्यक है कि परमेश्वर हमें इस मामले में अपनी इच्छा समझने में सहायता करे। हमें व्यक्तिगत रूप से विश्वास करना आवश्यक है (14:5ख); और हमें अपने विश्वासों और शिक्षाओं और कामों से मेल खाने की कोशिश करना आवश्यक है (14:23)।

### दयालु और विचारवान बनें

यदि कोई हमारे निष्कर्ष से असहमत होता है तो हम उसके बारे में प्रेम से चलने की ठान लें (14:15क)। आखिर यह वही है ''जिसके लिए मसीह मरा'' (14:15ग)। यदि हम मसीह में अपने भाइयों और बहनों से प्रेम करते हैं, तो हम उनके साथ आदरपूर्वक व्यवहार करेंगे (14:10ख)। दोष लगाने वाले होने के बजाय (14:10क), हम हर सम्भावित ढंग से वही समझाएंगे, जो वह कहते और करते हैं।

हम किसी भी चर्चा में इस विश्वास के साथ जाएंगे कि दूसरे लोग भी हमारे जितने ही ईमानदार हैं और वे भी प्रभु के लिए जीने का प्रयास कर रहे हैं (14:8)। हम दूसरे दृष्टिकोण को समझने की पूरी कोशिश करेंगे और उस स्थिति में किसी भी सामर्थ को मानने के लिए तैयार होंगे।

### देखभाल और चिंता करने वाले बनें

हम जो कुछ भी करते हैं, हमें चाहिए कि कोशिश करें कि किसी भाई को ठेस न पहुंचाएं या उसे निराश न करें (14:20क, 21)। सबसे बढ़कर हम मण्डली में फूट डालने या प्रभु की कलीसिया की ''निंदा'' (14:16) का कारण न बनें। प्रभु की सहायता से हम ''उन बातों का प्रयत्न करें जिनसे मेल-मिलाप और एक-दूसरे का सुधार हो'' (14:19)।

## सारांश

अध्याय 12 में पौलुस ने कहा, ''जहां तक हो सके, तुम अपने भरसक सब मनुष्यों के साथ मेल-मिलाप रखो'' (आयत 18)। हमारे बेहतरीन प्रयासों में कई बार किसी भाई के साथ मेल मिलाप से रहना असम्भव हो जाता है। कई बार उनसे ''पीछे हटना'' आवश्यक हो जाता है, ''जो उस शिक्षा के विपरीत फूट खिलाने का कारण होते हैं'' (16:17)। परन्तु यदि हम किसी भाई के साथ असहमत होने पर रोमियों 14 के सामान्य नियमों को लागू करें, तो ऐसे अवसर बहुत कम और देर बाद आएंगे। मेरे भाई कोय ने लिखा है:

> [रोमियों 14 के हमारे अध्ययन से] एक बात पक्की लगती है: हमें अपने और अपने भाइयों के बीच संगति की रेखाएं बड़ी हिचकिचाहट के साथ लगानी चाहिए। हमें स्वाभाविक और प्रेम करने वाले होना चाहिए, जो हमारे साथ असहमत होने वाले भाइयों को भी स्वीकार करने में लगे हों। यदि अन्त में हमें यह निष्कर्ष निकालने के लिए विवश किया जाए कि हम गलती के कारण जो किसी भाई ने की है, उसे संगति में नहीं लेना चाहते, तो यह बहुत ही उदासी, हिचक और आंसुओं के साथ होगा।[6]

टिप्पणियां

[1]यह वाक्यांश और शीर्षक में इस्तेमाल किया गया वाक्यांश कोय रोपर के ''हाओ क्रिश्चियन कैन डिसएग्री विदाउट चर्च द चर्च डिसएंटग्रेटिंग,'' *टुथ फ़ॉर टुडे,* जून 1989 पर आधारित था: 35-39. [2]चर्चा में आगे पौलुस ने ''पड़ोसी'' (15:2) शब्द का इस्तेमाल किया, शायद यह संकेत देते हुए कि इसकी व्यापक प्रासंगिकता बनाई जा सकती है। [3]जिम मैक्गुइगन, *द बुक ऑफ़ रोमन्स,* लुकिंग इन टू द बाइबल सीरीज़ (लब्बॉक, टैक्सस: मौंटेक्स पब्लिशिंग कं., 1982), 403. [4]एक सुझाई गई सूची इस प्रकार है। किसी भी विचार को जिसे आपको वचन में से सही ढंग से सिखाया नहीं गया या बताया नहीं गया, निकाल दें। आप वचन पर आधारित अपने विचार भी जोड़ सकते हैं। [5]पाठ के इस भाग में इस्तेमाल किए गए प्वायंट पर लैरी डियसन, *''द राइटेसनेस गॉड'': एन इन डेप्थ स्टडी ऑफ़ रोमन्स,* संशो. (कल्फिटन पार्क, न्यू यार्क: लाइफ़ कम्युनिकेशंस, 1989), 312, व चार्ल्स आर. स्विन्डल, *रेलेटिव टू अदर्स इन लव: ए स्टडी ऑफ़ रोमन्स-12-16* (फुलर्टन, कैलिफोर्निया: इन साइट फ़ॉर लिविंग, 1985), 40. से लिए गए थे। [6]रोपर, 37.

# पुराने नियम का मसीही व्यक्ति को लाभ
## (रोमियों 15:4)

रोमियों 15:4 में पौलुस ने कहा कि "जितनी बातें पहले से लिखी गईं, वे हमारी ही शिक्षा के लिए लिखी गई हैं कि हम धीरज और पवित्र शास्त्र के प्रोत्साहन द्वारा आशा रखें।" जैसा पहले कहा गया था, पहले से लिखी गईं और "पवित्र शास्त्र" उसी को कहा गया है, जिसे हम पुराना नियम कहते हैं।[1] नये नियम की पुस्तकों को भी "पवित्र शास्त्र" कहा गया था (देखें 2 पतरस 3:16), परन्तु कई सालों तक आरम्भिक मसीही लोगों के पास पुराने नियम की पुस्तकें ही धर्म शास्त्र था। (परमेश्वर की प्रेरणा पाए हुए लोगों के लिए नये नियम की पुस्तकें लिखने, उनकी प्रतियां बनाने, उन्हें कलीसियाओं में वितरित करने और अन्त में उन्हें एक पुस्तक में एकत्रित करने में समय लगा।)

### हमारे वचन पाठ से सबक

रोमियों 15:4 से कई सबक लिए जा सकते हैं। नीचे कुछ सच्चाइयां हैं, जिनका इस वचन में या तो संकेत है या स्पष्ट पता चलता है।

**लिखित वचन का महत्व**

कुछ लोग *लिखित* वचन को महत्व नहीं देते। परन्तु "जितनी बातें पहले से *लिखी गईं*" उनमें पौलुस का बड़ा विश्वास था। रोमियों की पुस्तक में बार-बार उसने कहा, "लिखा है" (1:17; 3:4, 10; 4:17; 8:36; 9:13, 33; 10:15; 11:8, 26; 12:19; 14:11; 15:3, 9, 21; देखें 4:23; 15:4)। लिखित वचन का आज भी वैसे ही महत्व है। *लिखे गए* के द्वारा ही हमें यीशु में विश्वास होता है (यूहन्ना 20:30, 31)।

**लिखित वचन की प्रेरणा**

"पवित्र शास्त्र" शब्द *graphe* के बहुवचन रूप ("लेखों") से लिया गया है। नये नियम के समय तक *graphe* का इस्तेमाल यहूदी लोगों द्वारा परमेश्वर की प्रेरणा से लिखे गए लेखों के लिए किया जाता था (देखें 2 तीमुथियुस 3:16, 17)। रोमियों की पुस्तक में "*पवित्र* शास्त्र" की बात की थी (1:2)।

हमारे वचन पाठ में *पवित्र शास्त्र* के द्वारा मिलने वाले प्रोत्साहन की बात करने के बाद (15:4) पौलुस ने कहा कि यह *परमेश्वर* ही है, जो हमें प्रोत्साहन देता है (आयत 5)। हम निष्कर्ष निकालते हैं कि परमेश्वर ही था जिसे वह पवित्र शास्त्र दिया, जो हमें प्रोत्साहन देता है। पौलुस ने अपने पत्र को पुराने नियम के हवालों से भर दिया क्योंकि उसका मानना था कि वह परमेश्वर की ओर से है।

## लिखित वचन का अविनाशी होना

नास्तिक लोग दावा करते हैं कि पवित्र शास्त्र का मूल वचन वर्षों से इतना बिगड़ चुका है कि हमें किसी प्रकार पता नहीं चल सकता कि मूल धर्म शास्त्र में क्या कहा गया था। पौलुस ऐसा नहीं मानता था। जिम मैक्गुइगन ने लिखा है:

> पौलुस यह मान लेता है कि पवित्र शास्त्र हम तक इतना सही रूप में पहुंचाया गया है कि हम उस पर जो पढ़ते हैं भरोसा कर सकते हैं। यदि निराशाजनक ढंग से बाइबल बिगड़ गई होती तो क्या होता? नये नियम के लेखक इतनी आसानी से उन वचनों को उद्धृत करके हम से उन पर ध्यान देने को नहीं कह सकते थे।[2]

परमेश्वर ने अपने वचन की रखवाली करने की प्रतिज्ञा की है और उसने इसकी रखवाली की भी है। यह अविनाशी है (देखें मत्ती 24:35; 1 पतरस 1:23)।

## लिखित वचन का निर्देश

रोमियों 15:4 में पौलुस के कहने का मुख्य उद्देश्य था कि पुराने नियम का धर्मशास्त्र केवल यहूदियों के लिए नहीं लिखा गया था, बल्कि मसीही लोगों को निर्देश देने के लिए भी लिखा गया था। कुरिन्थियों के नाम पत्र लिखते समय भी पौलुस ने इसी बात को समझाना चाहा। जंगल में इस्राएलियों के विस्तारपूर्वक उदाहरण देने के बाद उसने कहा, "परन्तु ये सब बातें जो उन [इस्राएलियों] पर पड़ीं, ... वे हमारी [मसीही लोगों की] चेतावनी के लिए जो जगत के अन्तिम समय में रहते हैं, लिखी गई हैं" (1 कुरिन्थियों 10:11)। डग्लस जे. मू ने लिखा है:

> पुराना नियम चाहे आज प्रत्यक्ष रूप से नैतिक निर्देश देने वाला नहीं रहा (देखें [रोमियों] 6:14, 15; 7:4–6) परन्तु यह विश्वासियों को उद्धार के इतिहास को समझने और नई वाचा के परमेश्वर के लोगों के रूप में अपनी ज़िम्मेदारियों को समझने में विश्वासियों की सहायता करने में मुख्य भूमिका निभाता है।[3]
>
> व्यवस्था की निरन्तर *प्रत्यक्ष अधिकार* को पौलुस की "न" पुराने नियम के *निरन्तर* महत्व को ज़ोरदार "हां" के साथ मिलाती है। ...[4]

रोमियों के नाम पत्र लिखने के समय पौलुस के साथ रहने वालों के साथ तीमुथियुस भी था (16:21)। पौलुस ने बाद में उस जवान प्रचारक को ये शब्द लिखे:

> ... बालकपन से पवित्र शास्त्र [पुराना नियम] तेरा जाना हुआ है, जो तुझे मसीह पर विश्वास करने से उद्धार प्राप्त करने के लिए बुद्धिमान बना सकता है। हर एक पवित्रशास्त्र [पुराना और नया दोनों नियम] परमेश्वर की प्रेरणा से रचा गया है और उपदेश, और समझाने, और सुधारने, और धर्म की शिक्षा के लिए लाभदायक है। ताकि परमेश्वर का जन सिद्ध बने, और हर एक भले काम के लिए तत्पर हो जाए (2 तीमुथियुस 3:15–17)।

## पुराने नियम से सबक

पहली सदी में पुराने नियम का दुरुपयोग होता था (देखें 1 तीमुथियुस 1:4) और आज हमारे समय में भी इसका दुरुपयोग होता है–सब्त (सातवें दिन) को मानने, आराधना में बाजों के साथ गाने, और पुराने नियम की अन्य रीतियों को सही ठहराने के प्रयासों में। परन्तु आज कम से कम पुराने नियम के छह स्पष्ट लाभ हैं।

### आरम्भ के प्रश्नों का उत्तर देने के लिए

संसार का आरम्भ कैसे हुआ? नया नियम ''पर सृष्टि के आरम्भ'' (मरकुस 10:6) पुराने नियम की ओर ध्यान दिलाता है। *लोगों* का अस्तित्व कैसे बना? यीशु ने कहा, ''क्या तुमने नहीं पढ़ा कि जिसने उन्हें बनाया उसने आरम्भ से नर और नारी बनाया [ ?]'' (मत्ती 19:4; देखें उत्पत्ति 1:27)। पौलुस ने कहा कि ''ऐसा ही लिखा है, कि प्रथम मनुष्य, अर्थात आदम, जीवित प्राणी बना'' (1 कुरिन्थियों 15:45; देखें उत्पत्ति 2:7)। आरम्भ के प्रश्नों का उत्तर देने के लिए मसीही व्यक्ति उत्पत्ति में वापस जाता है और उसे मालूम है कि वह सुरक्षित भूमि पर है क्योंकि यीशु और पौलुस ने भी यही किया था।

### यीशु के परमेश्वर होने को सिद्ध करने के लिए

कई प्रमाण हमें विश्वास दिलाते हैं कि यीशु परमेश्वर का पुत्र है, जिसमें उसकी अनोखी शिक्षाएं (यूहन्ना 7:46), उसका पाप रहित होना (यूहन्ना 8:46), उसके आश्चर्यकर्म (यूहन्ना 10:25), उसका निरन्तर प्रभाव (प्रेरितों 4:13), और उसका अद्वितीय बलिदानपूर्वक प्रेम (यूहन्ना 10:11) शामिल है। परन्तु नये नियम के वक्ताओं तथा लेखकों के लिए सबसे आकर्षित प्रमाण पुराने नियम से था। जब यीशु पृथ्वी पर था, तो उसने ''मूसा और सब भविष्यवक्ताओं के साथ'' आरम्भ किया और अपने चेलों का ध्यान उन बातों की ओर लगाया, जो ''*सारे* पवित्र शास्त्र में से अपने विषय में लिखी'' हुई थीं (लूका 24:27)। क्रिस बुलर्ड ने कहा है कि ''यदि आप पुराने नियम को पढ़ें, और छाया में यीशु को खड़ा न देख पाएं तो अच्छा होगा कि आप इसे फिर से पढ़ें।''[5]

कलीसिया की स्थापना के बाद, परमेश्वर की प्रेरणा पाए वक्ता मसीह को ऊंचा उठाने के लिए पुराने नियम की ओर ध्यान दिलाते थे (प्रेरितों 2; 3; 4; 7; 8; 10; 13; 17) में प्रवचन देखें।

### किस्म का अध्ययन करके विश्वास बनाने के लिए

पुराना नियम नये नियम की वास्तविकताओं की किस्मों और परछाइयों से भरा पड़ा है (देखें इब्रानियों 10:1)। नये नियम के कुछ भाग (जैसे इब्रानियों की पुस्तक) पुराने नियम के कुछ ज्ञान के बिना पूरी तरह से नहीं समझी जा सकती।

पुराने नियम में कुछ किस्में और परछाइयां हैं, जो आने वाले मसीहा (ख्रिस्तुस) की झलक देती हैं। उनमें से एक फसह का मेमना था (निर्गमन 12:21; यूहन्ना 1:29; 1 पतरस 1:19)। अन्यों में याकूब की सीढ़ी (उत्पत्ति 28:12; यूहन्ना 1:51), जंगल में पीतल का सांप (गिनती 21:8; यूहन्ना 3:14) और यहूदी महायाजक है (हागै 1:14; इब्रानियों 4:14)।

फिर पुराने नियम में नये नियम की कई शिक्षाओं की झलक मिलती है। मसीही लोग जब नूह के समय की प्रलय के बारे मे पढ़ते हैं (उत्पत्ति 6-9) तो हमें बपतिस्मा (1 पतरस 3:20, 21) और संसार के अन्त (2 पतरस 3:3-7) पर नये नियम की शिक्षा का स्मरण कराया जाता है। कई और उदाहरण हो सकते हैं (देखें गलातियों 4:21-31; 1 कुरिन्थियों 10:1-12)।

**नियमों की समानताओं को देखने के लिए**

पुराने और नये नियम को उनमें पाई जाने वाली समानताओं से प्रभावित हुए बिना नहीं पढ़ा जा सकता। कुछ मूल नियम वही रहते हैं। यह आज भी सच है कि मनुष्य केवल रोटी से जीवित नहीं रह सकता, उसे परमेश्वर की परीक्षा नहीं करनी चाहिए और केवल परमेश्वर की ही आराधना करनी चाहिए (व्यवस्थाविवरण 8:3; 6:16, 13; मत्ती 4:4, 7, 10)। परमेश्वर आज भी केवल ''चापलूसी'' (यशायाह 29:13; मरकुस 7:6) नहीं चाहता और आज भी ''दो बड़ी आज्ञाएं'' हैं (व्यवस्थाविवरण 6:5; लैव्यव्यवस्था 19:18; मत्ती 22:37-39)।

हम आज भी नये नियम की शिक्षा की पुष्टि के लिए पुराने नियम में जा सकते हैं। पौलुस ने सुसमाचार सुनाने वालों की सहायता के विषय में ऐसा ही किया (1 कुरिन्थियों 9:9, 10, 14; व्यवस्थाविवरण 25:4)। पक्षपात दिखाने के पाप पर सिखाते समय याकूब ने भी यही किया (याकूब 2:1-11; लैव्यव्यवस्था 19:18ग; निर्गमन 20:13, 14)।

**नियमों में अन्तरों को देखने के लिए**

बेशक दोनों नियमों में अन्तर भी हैं। पुराने नियम के नकारे जाने की पृष्ठभूमि को देखने पर हमें मसीह के राज्य के नये नियम एक बड़ी राहत देते हैं। पहाड़ी उपदेश में, यीशु ने बार-बार कहा, ''तुम सुन चुके हो कि कहा गया था'' या (या इसके समान), और उसके बाद कहा कि ''परन्तु मैं तुम से कहता हूं'' (मत्ती 5:21, 22, 27, 28, 31, 32, 33, 34, 38, 39, 43, 44)।

कई उदाहरण दिए जा सकते हैं। इब्रानियों की पुस्तक के लेखक ने कहा कि हमारे महायाजक अर्थात मसीह को ''उन महायाजकों की नाईं उसे आवश्यक नहीं कि प्रति दिन पहले अपने पापों और फिर लोगों के पापों के लिए बलिदान चढ़ाए; क्योंकि उसने अपने आप को बलिदान चढ़ाकर उसे एक ही बार निपटा दिया'' (इब्रानियों 7:27)। रोमियों 12 में पौलुस ने कहा (संकेत से) कि अब हमें मृत जानवरों के बलिदान की आवश्यकता नहीं है; बल्कि हमें ''अपने शरीरों को जीवित और पवित्र और परमेश्वर को भावता हुआ बलिदान चढ़ाना है। यही [हमारी] आत्मिक सेवा है'' (आयत 1)।

**उदाहरणों के द्वारा प्रोत्साहन पाने के लिए**

रोमियों 15:4 में विशेषकर उस *प्रोत्साहन* पर ज़ोर दिया गया , जो पुराने नियम का शास्त्र हमें दे सकता है। यीशु ने समझाने और ताड़ना देने के लिए पुराने नियम के उदाहरणों का इस्तेमाल किया। उसने नूह (उत्पत्ति 6-9; मत्ती 24:37, 38); लूत और उसकी पत्नी (उत्पत्ति 19; लूका 17:28, 29, 32); सुलैमान और शीबा (दक्षिण) की रानी (2 इतिहास 9:1-12; लूका 11:31; मत्ती 12:42); एलिय्याह और विधवा (1 राजाओं 17; लूका 4:26); और एलीशा और नामान

(2 राजाओं 5; लूका 4:27) की बात की।

पुराने नियम के महत्वों में से एक यह है कि यह परमेश्वर की आज्ञा मानने या उसकी बात न मानने के अन्तिम परिणाम को दिखाता है। नया नियम चालीस या इससे अधिक वर्षों के दौरान लिखा गया था। प्रतिफलों की प्रतिज्ञाएं और चेतावनियां दी गई हैं, परन्तु नये नियम में उन लोगों के अन्तिम भविष्य के केवल कुछ एक ही उदाहरण हैं, जिन्होंने आज्ञा मानी या तोड़ी (प्रेरितों 5:1-11)। दूसरी ओर, पुराना नियम एक हज़ार वर्षों से अधिक समय में लिखा गया था। इसमें परमेश्वर के वचन को मानने वालों और इसे न मानने वालों के उदाहरणों से और उसके परिणामों से भरा है। पुराने नियम से हम सीखते हैं कि परमेश्वर उन्हें आशीष देता है, जो उसकी बात मानते हैं (इब्रानियों 11)। हम यह भी सीखते हैं कि उन पर विनाश आता है जो उसकी बात नहीं मानते (1 कुरिन्थियों 10:1-12)।

## सारांश

आज हम यीशु की नई वाचा (नियम) के अधीन हैं, परन्तु इसका अर्थ यह नहीं है कि पुरानी वाचा (नियम) का हमारे लिए कोई महत्व नहीं है। आज भी हमें इसे पढ़ना और इसका अध्ययन करना चाहिए, ''जितनी बातें पहले से लिखी गईं, वे हमारी ही शिक्षा के लिए लिखी गई हैं कि हम धीरज और पवित्र शास्त्र की शान्ति के द्वारा आशा रखें'' (रोमियों 15:4)।

---

टिप्पणियां

[1]इब्रानियों की पुस्तक के लेखक ने दोनों वाचाओं (नियमों) में पहली *वाचा* और दूसरी *वाचा* में अन्तर किया (देखें इब्रानियों 8:7)। दूसरी वाचा को उसने ''नई वाचा'' (8:13) या ''नियम'' (देखें 9:15; KJV) कहा, यह संकेत देते हुए कि ''पहली वाचा'' पुरानी हो गई है (देखें 8:13)। [2]जिम मैक्गुइगन, *दि बुक ऑफ़ रोमन्स,* लुकिंग इनटू द बाइबल सीरीज़ (लब्बॉक, टैक्सस: मोंटैक्स पब्लिशिंग कं., 1982), 412. [3]डग्लस, जे. मू, *रोमन्स,* दि NIV एप्लीकेशन कमैंट्री (ग्रैंड रैपिड्स, मिशिगन: जौंडरवन पब्लिशिंग हाउस, 2000), 471. [4]वही, 474. [5]ओवरलैंड पार्क चर्च ऑफ़ क्राइस्ट, ओवरलैंड पार्क, कैनसस, 13 जनवरी 1991 को दिया गया संदेश, क्रिस बुलर्ड ''ए मैन विद ए मिशन,'' सरमन प्रीचर्ड एट। [6]ह्यूगो मेकोर्ड, ''दि क्रिश्चियन'स यूज़ ऑफ़ द ओल्ड टैस्टामेंट,'' *अबिलेन क्रिश्चियन कॉलेज एनुअल बाइबल लिटरेचर्स* (1966): 192-201.

| पुराने मसीही व्यक्ति का इस्तेमाल | |
|---|---|
| **आरम्भ** के प्रश्नों का उत्तर देने के लिए | संसार का:<br>मरकुस 10:6<br>लोगों को:<br>मत्ती 19:4; 1 कुरिन्थियों 15:45 |
| यीशु के **ईश्वरीय** होने को साबित करने के लिए | यीशु:<br>लूका 24:27<br>अन्य:<br>प्रेरितों 2; 3; 4; 7; 8; 10; 13; 17 |
| **किस्म** के अध्ययन से विश्वास बनाने के लिए | यीशु का प्रतिरूप:<br>मेमना, आदि<br>नये नियम की शिक्षा का प्रतिरूप:<br>प्रलय, आदि |
| नियमों की **समानताएं** देखने के लिए | अपरिवर्तनीय नियम:<br>मत्ती 4<br>नये नियम की शिक्षा की पुष्टि हुई:<br>1 कुरिन्थियों 1:9 |
| नियम के **अन्तर** देखने के लिए | यीशु:<br>मत्ती 5<br>अन्य:<br>2 कुरिन्थियों 3:3; रोमियों 12:1 |
| **उदाहरणों** से प्रोत्साहित होने के लिए | आज्ञा माना:<br>इब्रानियों 11<br>आज्ञा न मानना:<br>1 कुरिन्थियों 10 |

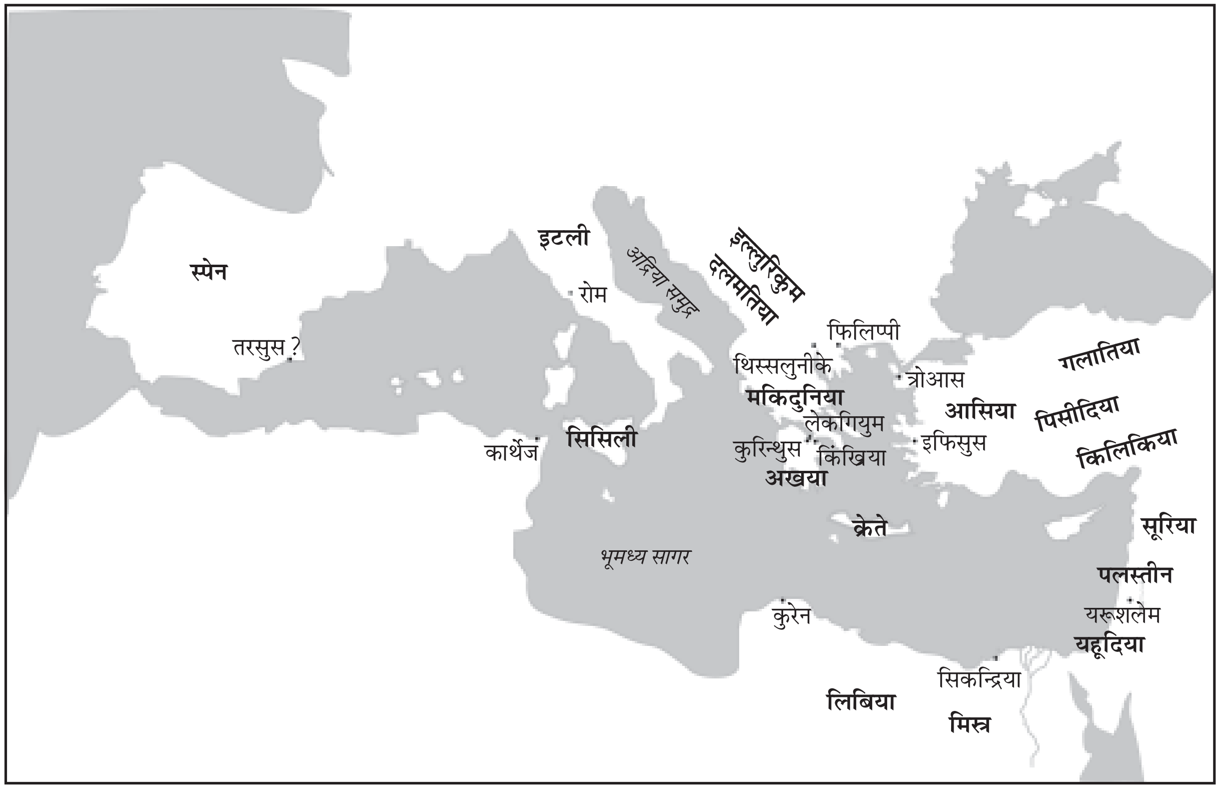


**पौलुस के रोमियों की पत्री लिखने के समय का रोमी साम्राज्य**

# मण्डलियों में सहयोग के लिए बाइबल का नमूना?

कई दश्क पूर्व कुछ भाइयों ने घोषणा की कि उन्होंने मण्डलियों में सहयोग का नमूना ढूंढ़ लिया है। उनकी यह शिक्षा यरूशलेम में भेजी जाने वाली परोपकारी सहायता के दो विवरणों पर आधारित थी। पहली घटना प्रेरितों 11:27-30; 12:25 में मिली है। दूसरी घटना के विषय में हम 1 कुरिन्थियों 16:1-4; रोमियों 15:25-28, 31 में हम पढ़ते हैं। जिन लोगों के साथ मैंने इस मुद्दे पर चर्चा की है वे यह ज़ोर देते हैं कि इस नमूने में इस प्रकार की विशेषताएं समीलित हैं:

- वचन के अनुसार एक मण्डली द्वारा किसी दूसरी मण्डली को फंड भेजना परोपकार के लिए अर्थात *भौतिक* आवश्यकताओं के लिए है।
- एक मण्डली किसी दूसरी मण्डली के लिए परोपकारी सहायता तभी भेज सकती है यदि आपात स्थिति हो और जब तक वह आपात स्थिति रहे।
- किसी मण्डली के लिए सीमित ढंग के साथ बड़े संसाधनों वाली मण्डली को धन भेजना वचन के अनुसार नहीं है।

यह तथाकथित नमूना विश्वास की बात घोषित किया गया। जिसके परिणाम में प्रभु की कलीसिया की कई मण्डलियां विभाजित तो गई। मुझे बताया गया है कि आज यह स्थिति संसार के कई क्षेत्रों में मण्डलियों की एकता के लिए खतरा बनी हुई हैं। इस ''नमूने'' को मानने वालों की निष्कपटता पर बिना कोई संदेह किए, मेरा मानना है कि कई अवलोकन सही हैं। पहले तो मैं यह कहता हूं कि वचन में *किसी* भी कारण से किसी दूसरी मण्डली को धन भेजने का कोई स्पष्ट उदाहरण नहीं है। नमूने के वचनों को ध्यान से पढ़ें।[1]

> चन्दा ले जाने का पौलुस का *एक* कारण *भौतिक* आवश्यकता को पूरा करना था। परन्तु चन्दे का मूल कारण *आत्मिक* आवश्यकता अर्थात अन्यजाति मसीही लोगों तथा यहूदी मसीही लोगों को निकट लाना था। एक मण्डली के लिए प्रेम व्यक्त करने अर्थात एक अर्थ में यह कहने के लिए कि ''हम आपका समर्थन करते हैं और आपकी बेहतरी चाहते हैं'' किसी दूसरी मण्डली को धन (या अन्य सहायता) भेजना वचन के अनुसा है।
>
> यरूशलेम में एक निश्चित भौतिक आवश्यकता थी, परन्तु ऐसा कोई संकेत नहीं है कि इसे आपात स्थिति के रूप में माना जाना चाहिए। यरूशलेम के लिए चन्दा करने का कार्य आरम्भ तथा पूरा करने में कई साल लग गए। यह किसी आपात स्थिति से निपटने का अप्रभावकारी ढंग होना था। संकेत है कि आर्थिक सहायता यरूशलेम के मसीही लोगों की निरन्तर आवश्यकता थी न कि आपात स्थिति में।
>
> पौलुस ने ''यरूशलेम के पवित्र लोगों *में* निर्धनों'' की बात की (रोमियों 15:26)। हमारे पास ऐसा कोई संकेत नहीं है कि यरूशलेम के *हर* मसीही को आर्थिक सहायता की

आवश्यकता थी या मिली। इसके अलावा चाहे यरूशलेम के कुछ पवित्र लोग "निर्धन" (ptochos से), उन्हें सहायता भेजने वालों में से कुछ लोग "*भारी* [bathos से] कंगालपन [ptochos से]" में थे (2 कुरिन्थियों 8:2)। इसलिए जिनके पास अधिक था उनके द्वारा उन्हें देने का जिनके पास कम था नये नियम में मेल खाता कोई "नमूना" नहीं है।

बाइबल के छात्रों में जो नये नियम की मसीहियत की बहाली के प्रति समर्पित एक मण्डली द्वारा किसी दूसरी मण्डली को सहायता करने के विशेष नमूने को देखे बिना सदियों तक परोपकारी सहायता के दो उदाहरणों को पढ़ा था। दोनों विवरणों में ऐसा कोई संकेत नहीं है कि पौलुस सदा के लिए मण्डलियों के संयोग का नमूना ठहराना चाहता हो।

---

टिप्पणी

[1]पहली घटना में (प्रेरितों 11; 12) धन *चेलों* (मसीही लोगों) की ओर से *प्राचीनों* को भेजा गया था। दूसरी घटना में (रोमियों 15; 1 कुरिन्थियों 16; 2 कुरिन्थियों 8; 9), धन *कलीसियाओं* की ओर से *पवित्र लोगों* को भेजा गया था। यह भी सम्भव है कि पौलुस तथा उसके सहकर्मियों ने यरूशलेम में उस धन का वितरण किया हो (देखें 2 कुरिन्थियों 8:19, 20)। मण्डली निजी मसीही लोगों से बनती है इसलिए कुछ लोगों का कहना है कि हम तर्कसंगत ढंग से यह मान सकते हैं कि धन मण्डली से मण्डली तक भेजा जाता था। शायद यह सही है, परन्तु ज़बर्दस्ती का नमूना "तर्कसंगत मान्यता" पर आधारित नहीं हो सकता।

# अपने घर में कलीसिया कैसे आरम्भ करें

यदि आपके यहां प्रभु की कलीसिया की कोई मण्डली आराधना के लिए इकट्ठी नहीं होती है, तो आप अपने घर में परमेश्वर के विश्वासयोग्य आराधना आरम्भ कर सकते हैं। जब तक हम परमेश्वर की आराधना के लिए इकट्ठा होते हैं तब तक इस बात से कोई फर्क नहीं पड़ता कि कलीसिया कहां इकट्ठी होती है। नये नियम में आराधना के लिए किसी विशेष भवन या मन्दिर में आराधना करने की कोई आज्ञा नहीं है। वचन के अनुसार आराधना यीशु के नाम में कहीं भी दो या तीन लोगों के इकट्ठा होने से हो सकती है (मत्ती 18:20)।

नया नियम स्पष्ट कर देता है कि परमेश्वर ने किस बात को स्वीकार किया है और पहली शताब्दी की कलीसिया में उसने किस बात को अस्वीकार किया है। हमें अनुमान लगाने की आवश्यकता नहीं है कि आरम्भिक मसीही कैसे आराधना करते थे, क्योंकि बाइबल हमारे लिए परमेश्वर को स्वीकृत आराधना का एक नमूना देती है।

नये नियम में मसीही लोग सप्ताह के पहले दिन अर्थात रविवार को इकट्ठा होते थे। यह वही दिन था जब प्रभु मुर्दों में से जी उठा था। जब वे आरम्भिक मसीही रविवार के दिन आराधना के के लिए इकट्ठे होते, तो वे उस भोज में भाग लेते थे जो अपनी मृत्यु और जी उठने के स्मरण को मनाने के लिए यीशु ने ठहराया था। यह स्पष्ट है कि वे प्रत्येक रविवार इस भोज में भाग लेते थे। यह "प्रभु का भोज" था (1 कुरिन्थियों 11:20), जो प्रभु के प्रत्येक दिन लिया जाता था। इब्रानियों 10:25; 1 कुरिन्थियों 11:22; 16:1, 2 और प्रेरितों 20:7 को ध्यान से पढ़ें। प्रभु भोज लेने पर आपको अपने प्रभु के निर्देशों तथा प्रेरितों के काम पुस्तक में मसीही लोगों के नमूने को मानने की इच्छा होगी।

प्रत्येक रविवार, आपके इलाके के लोग जिन्होंने मसीह की आज्ञा मान ली है, आराधना के लिए इकट्ठे होने चाहिए। आपको गाना, प्रार्थना करनी और परमेश्वर के वचन का अध्ययन करना चाहिए (देखें प्रेरितों 2:42; इफिसियों 5:19, 20; कुलुस्सियों 3:16)। आराधना सेवा में बीच में किसी समय, उस भोज में भाग लें जो यीशु ने आपको दिया है। इसके अलावा प्रभु के काम के लिए देने के लिए हर मसीही को "एक ओर बचाकर रखना" भी आवश्यक है। आराधना के लिए इकट्ठा हुई कलीसिया में एक उपयुक्त समय में, हर मसीही को नये नियम की शिक्षा के अनुसार अपनी आमदनी में से देने का अवसर दिया जाना चाहिए (1 कुरिन्थियों 16:1, 2)। याद रखें कि यह आराधना की एक अभिव्यक्ति है और भक्तिपूर्वक और आनंद से की जानी चाहिए। दिए गए दानों का इस्तेमाल कलीसिया के कामों के लिए किया जाना चाहिए। इकट्ठे हुए धन के इस्तेमाल के ढंग का फैसला सामूहिक रूप में कलीसिया द्वारा लिया जाना चाहिए न कि एक व्यक्ति द्वारा।

आराधना सेवा का प्रबन्ध जैसे भी किया जाए, आराधना की इन बातों अर्थात, गाना, प्रर्थना, परमेश्वर के वचन का अध्ययन, प्रभु भोज और प्रभु के काम के लिए चंदा भी शामिल किया जाना

आवश्यक हैं। साथी मसीही लोगों को बाइबल अध्ययन, प्रार्थना और गीत गाने के लिए सप्ताह के दौरान अन्य समयों पर भी इकट्ठा होना चाहिए। भाइयों के लिए मिलकर आराधना करना और प्रभु में एक दूसरे को प्रोत्साहित करना आवश्यक है।[1]

---

टिप्पणी

[1]ट्रुथ फ़ॉर टुडे वर्ल्ड मिशन स्कूल, *बिकमिंग ए फ़ेथफुल क्रिश्चियन,* तीसरा अंक (सरसी, आरकैंसा: ट्रुथ फ़ॉर टुडे वर्ल्ड मिशन स्कूल, 2006), 250–54 से लिया गया।